मेहनतकशों का पैग़ाम *मेहनतकशों के नाम*

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- बसें तो चला नहीं पाये बातें मैट्रो रेल की
- शहर में बढता क्राइम ग्राफ़ 3
- पुलिस का (अ) सामाजिक उत्पाद
- गतांक की चीर-फ़ाड़ 4
- पिटे मोहरे को फ़िर भाजपा की कमान साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की रणनीति 5
- सुनपेड़ कांड: निर्दोष आरोपियों की जमानत से 'क्रोधित' शिकायतकर्ता जितेन्द्र 8

वर्ष 29 अंक 6 फरीदाबाद, सोमवार 1-15 फ़रवरी 2016 फोन : - 9999595632 2 ₹

आतंकी मसूद अजहर का मंत्र बनाम फुस्स मिसाइलों का गणतंत्र

'71 में इन्दिरा ने पाकिस्तान तोड़ा: '98 में अटल ने मूर्खता का पोखरण फ़ोड़ा

1971 के भारत-पाक युद्ध में सारी दुनिया के सामने स्पष्ट कर दिया था कि सैन्य-शक्ति में श्रेष्ठ कौन है। 1974 में इन्दिरा गांधी ने पोखरण-I इसी ताकत के भरोसे किया था। इस परमाणु बम परिक्षण से भारत न केवल पाकिस्तान से मीलों आगे निकल गया बल्कि चीन के मुकाबले भी उसे एक बेहद कारगर सुरक्षात्मक रणनीति हासिल हो गयी। 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी ने पोखरण -II करके सारी बढत पर पानी फ़ेर दिया। पाकिस्तान पर तब तक जो अमेरिकी दबाव परमाणु विसफ़ोट न करने के लिये काम कर रहा था, वह अचानक एकबारगी हट गया। तुरन्त ही पाकिस्तान ने भी अपना परमाणु बम विस्फ़ोट किया और वह सैन्य शक्ति में भारत के बराबर आ खड़ा हुआ। उस दिन से न तो भारत की पारम्परिक सैन्य श्रेष्ठता का कोई अर्थ रहा और न अब उसकी आणुविक पहल से पाकिस्तान को डराया जा सकता था। इस स्थिति के कायम रहते भारत की ब्रह्मोस और अग्नि मिसाइलों से पाकिस्तान में बैठे किसी मसूद अजहर को डरने की जरुरत नहीं।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

जहाज बिक गये हैं.......

इस 26 जनवरी को टीवी के पर्दे पर गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेती हिन्दुस्तानी मिसाइलों को देखकर पाकिस्तानी आतंकी निश्चित ही मंद-मंद मुस्करा रहा होगा। पाकिस्तान से चलाये जा रहे आतंकी नेटवर्क को नुकसान पहुचाने में ये मिसाइलें फुस्स ही साबित होंगी। हज़ारों करोड़ खर्च करके हज़ारों मील दूर तक मार करने की क्षमता वाली इन मिसाइलों का शायद ही कोई फ़ायदा मिल पाये। क्योंकि उस हालात में पाकिस्तान की ओर से परमाणु हमला होना निश्चित होगा। यानी तब भारत और पाकिस्तान एक ही स्तर पर पहुंच जायेंगे। जितना एक का उतना ही दूसरे का भी।

पठानकोट वायुसेना स्टेशन पर पाक आतंकी हमले की पृष्ठ भूमि में वहां के पूर्व फ़ौजी तानाशाह मुशर्रफ़ की परमाणु युद्ध की धमकी गुंजती रही। भारत इस बीच आतंकी मजहर और उसके गुर्गों ने पठानकोट हमले की ज़िम्मेदारी अपने सिर ले ली तथा पाकिस्तानी सरकार ने मामले में जांच और गिरफ़्तारियों का नाटक भी किया। पर मसूद अजहर और उसके साथियों को वहां छुट्टे सांड की तरह खुले घूमते देखा जा सकता है।

रक्षा मंत्री मनोहर पारिकर ने क्षमा मांगने के अंदाज़ में कुछ कठोर भाषा का प्रयोग अवश्य किया है। मसलन, 'आतंकी जहां कहीं भी हों उन्हें सज़ा दी जायेगी,' या 'हमारी सेना हर हमले का मुंहतोड़ जवाब देने में समर्थ हैं' इत्यादि। उनकी यह भंगीमा हास्यस्पद ही कही जायेगी, क्योंकि प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और विदेश मन्त्री ने पाकिस्तानी 'कार्यवाही' में विश्वास प्रगट करते हुए दोनों देशों के बीच बात-चीत का सिलसिला ज़ारी रखने का रोडमैप दोहराया। वाजपेयी के पोखरण-II की आत्मघाती मूर्खता ने अन्य तमाम कूटनीतिक/रणनीतिक रास्ते बंद किये हुए हैं। सिर्फ़ एक रास्ता खुला है-कभी न अन्त होने वाली बातचीत का।

वैसे देखा जाय तो भारत और पाकिस्तान के बीच असली समस्या मसूद अजहर जैसे आतंकी नहीं हैं। असली समस्या है कशमीर इसके एक मात्र व्यवहारिक हल को स्वीकार न कर पाने की। दोनों ओर के नेताओं में किसी ऐसे जननायक का अभाव है जो कशमीर के भूगोल की वर्तमान स्थिति को ही समस्या का हल मान कर शान्ति की दिशा में पहल करे। कशमीर का जो हिस्सा भारत में है वह भारत में रहे और जो पाकिस्तान में है वह पाकिस्तान में रहे। इस समस्या का यही एक मात्र व्यवहारिक हल है।

तब तक गणतंत्र दिवस पर भारत की ओर से 'फुस्स' मिसाइलों का प्रदर्शन चलता रहेगा। तब तक पाकिस्तान की ज़मीन पर मसूद अजहर से आतंकवादी फ़लते-फूलते रहेंगे। तब तक मोदी और नवाज शरीफ़ जैसे प्रधानमंत्री कभी मुंह फुला कर तो कभी मुस्करा कर आपस में बातचीत का नाटक ज़ारी रखेंगे तब तक दोनों देश एक दूसरे के खिलाफ़ अमेरिकी थाने में रपट बदसतूर लिखाते रहेंगे।

महाशय ओलांद रफेल बेचने आये थे

जहाज तो बिके, आंतकवाद को फिर कभी देखेंगे

फ्रांस के राष्ट्रपति ओलांद को इस वर्ष गणतंत्र दिवस की परेड के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में तालियां बजाते करोड़ों देशवासियों ने देखा होगा। राजपथ पर राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच विराजमान ये महाशय वास्तव में बेहद प्रसन्न नज़र आ रहे थे। किसी को यह मुगालता नहीं रहना चाहिये कि वे परेड में भारतीय टुकड़ियों के मार्च पास्ट या फ़िर झांकियों के प्रदर्शन को देखकर इतने खुश हुए होंगे। दरअसल, इस दौरे में उन्होंने भारत को 36 हज़ार करोड़ के फ्रांसीसी रफ़ेल बम वर्षक विमानों को बेचने के सौदे पर हस्ताक्षर किये, और यही उनकी गर्माहट-भरी तालियों का राज़ था।

भारत में पैर रखते ही महाशय ओलांद ने आतंकवाद के विरोध में भारत से सहयोग करने की बात भी जोश-खरोश से की। साथ में अपने मोदी जी भी इस अदा पर मंद-मंद मुस्करा रहे थे। देशवासियों में यह संदेश भेजा गया कि पाकिस्तानी आतंकवाद से लड़ने में भारत को एक सक्रिय मित्र मिल गया है। हाल में पेरिस में हुई आतंकी घटनाओं ने भी इस विश्वास को पैर जमाने में पुख्ता ज़मीन प्रदान की। पर अगले दिन ही इस पाखंड से पर्दा उठ गया और रफ़ेल विमान की खरीद पर दोनों भागीदारों की नई दोस्ती परवान चढती मिली।

मोदी और ओलांद एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। दोनों ही अपने-अपने देशों के कार्पोरेट हितों के सशक्त वाहक हैं। मोदी की विदेश यात्रायें भी अडाणी-अम्बानी की मुनाफ़ाखोरी सुनिश्चत करने के लिये होती हैं।

कार्पोरेटपरस्ती का यही जज्बा ओलांद को भी भारत यात्रा पर खींच लाया। दोनों ओर से घोषणा यह भी हुई है कि अभी विमान की अन्तिम कीमतों को लेकर बातचीत चल रही है। जानकारों को पता है कि अन्तिम समय में की जाने वाली यह सौदेबाज़ी कीमतों को लेकर नहीं कमीशन को लेकर होती है।

रफ़ेल विमान का सौदा क्या मोदी सरकार के लिये राजीव गांधी का बोफ़ोर्स साबित होगा? महाशय ओलांद तो रफ़ेल बेच कर जा लिये।

ख़बर दार

शनि से काल्पनिक साक्षात्कार

यक्ष - क्या औरतों का शनिशिग्नापुर शनिमन्दिर के गर्भ गृह में प्रवेश वर्जित होना चाहिए ?
युधिष्ठिर - बिलकुल वर्जित होना चाहिए ?
यक्ष - लेकिन क्यों ?
युधिष्ठिर- क्योंकि शनि महराज को तेल चढ़ाया जाता है और इससे उनके फिसलने का खतरा बढ़ जायेगा? वैसे भी हिन्दू देवताओं का रिकार्ड इस मामले में बहुत अच्छा नही है?

- **पंकज मिश्रा**

म.मो.-आज के दिन हे शनि देवता, आप भारतीय मीडिया और राजनीति में छाये हुए हैं। पिछले 15 साल में ही देश में आपके मन्दिरों की बाढ आ गयी है और हर चौराहे पर छोटे-छोटे बच्चों का आपके नाम पर भीख मांगने का सिलसिला भी चल पड़ा है। इससे पहले तो आप सिर्फ़ पंडितों के पतरों में ही हुआ करते थे और जब-तब साढे-साती के नाम पर शिकार फंसाने के काम आते थे। आपकी अचानक इस बढती लोकप्रियता का राज क्या है?

शनि-बच्चा! लगता है तुम्हारी साढे-साती उतर गयी है, वरना तुम यह आर टी आई नुमा सवाल मुझ से पूछने की जुर्रत न करते। खैर, अब पूछ ही लिया है तो तुम्हारी जिज्ञासा भी शांत कर देता हूं। क्या तुम्हें पता नहीं कि पिछले 25 वर्षों से भारत में वैश्वीकरण-उदारीकरण ने ज़ोर पकड़ लिया है। मोदी जी के आने के बाद यह प्रक्रिया और स्वछंद हुई है। इसी का असर हमारी बढती लोकप्रियता में देखा जा सकता है।

म.मो.-महाराज क्या आपके काले भयानक रूप-रंग व आकार-प्रकार से महिलाओं को डर नहीं लगता जो वे आपकी सेवा में जबरदस्ती आना चाहती हैं?

शनि-यह रूप-रंग या आकार-प्रकार का मामला है ही नहीं। क्या भारत की अर्थव्यवस्था में काले धन की प्रधानता नहीं है? ज़्यो-ज़्यों भारतीयों का काले धन की ओर आकर्षण बढता जा रहा है, त्यों-त्यों हमारे प्रति भी। इसी बहाने गरीब बालकों को शनिबार के दिन रोज़गार मिल जाता है, बेशक उन्हें शिक्षा नसीब न हो। इसी बहाने काफ़ी काला धन मेरे मन्दिरों के निर्माण में लगकर सफ़ेद हो जाता है और तमाम भक्तों को राह चलते काले धन से अपना कुशल-मंगल खरीदने की सुविधा मिल जाती है। इन मन्दिरों के इर्द-गिर्द दुकानदारों ओर अन्य व्यावसायिक गतिविधियों का जमावड़ा बन जाता है। इस मंदी के दौर में देश की अर्थ व्यवस्था के कुशल-मंगल का इससे बढिया जतन और क्या हो सकता है?

म.मो-थोड़ा इस पर भी प्रकाश डालिये कि एक मन्दिर विशेष में स्त्रियों के जबरन प्रवेश का भाजपाईयों से लेकर कम्युनिस्टों तक का समर्थन प्राप्त हो रहा है। दोनों ही इसे स्त्री की बराबरी से जोड़ कर देख रहे हैं। समझ में नहीं आता कि यह नारी-मुक्ति में विश्वास की लड़ाई है या नारी-दासता को मजबूत करने में अंधविश्वास की?

शनि-मुझे तो भक्तों का अंधविश्वास ही रास आता है। राजनीतिक दल अपने-अपने फ़ायदे में, अपने-अपने हिसाब से कोई भी शब्दावली चुनने को स्वतंत्र हैं। इस अवसर पर मेरा आशीर्वाद भाजपाईयों के लिये भी उतना ही है जितना कम्युनिस्टों के लिये।

म.मो.-यह क्या रहस्य है कि इक्का-दुक्का शनि मंदिरों को छोड़कर बाकी सब में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित नहीं है? धर्म इस मामले में क्या कहता है?

शनि-धर्म तो वही कहता है जो चढावा चढाने वाले यजमान सुनना चाहते हैं। इन इक्का-दुक्का मंदिरों में जहां अभी महिलाओं का प्रवेश वर्जित है, वहां भी यजमानों की अर्थव्यवस्था से ही धर्म की व्यवस्था भी तय होगी।